आधुनिक राजस्थानी साहित्य में जैन दर्शन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय
राजस्थान

राजस्थानी भाषा राजस्थान प्रान्त के लोगों द्वारा बोली जाती है, यानि राजस्थानी राजस्थान प्रांत की मातृ भाषा है। माता बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। माँ के द्वारा बच्चे को प्रारम्भ से ही जो भाषा सिखाई जाती है, उसे मातृ भाषा (Mother Tongue) कहते हैं। एक ही परिवार के सदस्य, एक ही प्रांत के सदस्य जब मातृ भाषा में वार्तालाप करते हैं तो मन एवं हृदय दोनों आह्लाद की अनुभूति करते हैं। आन्तरिक प्रसन्नता हर मानव के जीवन का अन्तिम लक्ष्य होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बिना समाज के वह अपना जीवनयापन नहीं कर सकता है। सामाजिक जीवनयापन का सशक्त माध्यम भाषा है। राजस्थानी में कहावत है, **''बोल्या के लाध्या''**। इन्सान ज्योंही वार्तालाप करता है, सामने वाला उसके स्वभाव, विद्वता, चिन्तन की गहराई नाप लेता है। राजस्थानी भाषा में मिठास, अपनापन, सम्मान, भाईचारा, सौहार्द, शान्तिपूर्ण सहवास, **''जीओ और जीने दो''** के गुण समाहित हैं। कुल मिलाकर इस शोध कार्य से जाहिर है कि राजस्थानी भाषा भारतीय संविधान में प्रान्तीय भाषा में चयनित किए जाने की पूर्ण योग्यता रखती है तथा केन्द्र सरकार को इसे चयनित करना चाहिए।

डॉ. (श्रीमती) रेखा भंसाली ने प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत जो कि जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) के राजस्थानी विभाग में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष रह चुके हैं, के कुशल निर्देशन में वर्ष 2000 में पी–एच.डी. (राजस्थानी) की उपाधि प्राप्त की। वे अब शोध–प्रबन्ध को पुस्तकाचार दे रही हैं। मेरा सौभाग्य है कि मेरी मातृभाषा के शोध–प्रबन्ध पर मुझे भूमिका लिखने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। मैं क्षमाप्रार्थी हूँ कि मातृभाषा राजस्थानी अच्छा बोल सकता हूँ, लेकिन लिपिबद्ध नहीं कर सकता, अतः यह भूमिका हिन्दी भाषा में लिख रहा हूँ। डॉ. रेखा भंसाली ने शोध का विषय **''आधुनिक राजस्थानी साहित्य में जैन दर्शन''** लिया है, जो कि समीचीन, जनोपयोगी व शोधार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं मील का पत्थर सिद्ध होगा।

पहले अध्याय में राजस्थानी भाषा में जैन साहित्य, चारण साहित्य, लौकिक साहित्य, सन्त साहित्य एवं गद्य साहित्य को दर्शाते हुए इनके मौलिक सिद्धान्तों, प्रत्येक साहित्य का समाज पर प्रभाव एवं स्वस्थ समाज रचना में इन साहित्यों के योगदान पर संवत् सहित सिलसिलेवार बहुत सुन्दर प्रस्तुति दी गई है। इनको पढ़ने से महसूस होता है कि राजस्थानी भाषा में रचित साहित्य कितना मोहक, गुणकारी तथा भारतीय संस्कृति की महत्ता बताने वाला है। आने वाले शोधार्थियों के लिए यह एक भविष्य निधि है।

दूसरे अध्याय में केवल जैन धर्म–दर्शन की बात कही गई है। जैन धर्म के चार सम्प्रदाय–दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानवासी, तेरापंथी जो सभी भगवान महावीर के अनुयायी हैं, जिनमें महाव्रतों, समिति एवं गुप्ति कुल 13 सिद्धांतिक बातों में कोई अन्तर नहीं है, लेकिन अपनी–अपनी आचार–मीमांसा का अन्तर है। इस अध्याय में जैन दर्शन की तत्त्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, आचार मीमांसा का सांगोपांग विवेचना करते हुए **''सम्यकदर्शनज्ञानचारिताणि मोक्षमार्गः''** पर बल दिया गया है। जैन दर्शन आत्मा को अजर, अमर, अविनाशी व शरीर व्यापी मानता है। राग–द्वेष रूपी कर्मरज अनादि अनन्त काल से आत्मा से सम्बद्ध होने के कारण आत्मा अज्ञान दशा में रहती है तथा आयुष्य कर्म के अनुस्तर नये–नये शरीर धारण करती रहती है। आत्मा **''ज्ञाता–दृष्टा''** अपने मौलिक स्वभाव में निरंतर रमण कर राग–द्वेष रूपी अज्ञान को शून्य कर मुक्ति को प्राप्त कर सकती है।

तीसरे अध्याय में राजस्थानी जैन साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं तथा समय–समय पर हुए उनके रचनाकारों की रचनाओं का समग्र रूप से विवेचन है। इस अध्याय में वर्णित किया गया है कि पद्य एवं गद्य दोनों ही शैलियों का उस समय के समाज पर भारी प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ है। जैन दर्शन की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक रचनाओं से समाज में भ्रांतियों, कुरीतियों, अन्याय, हिंसा, अहंकार, प्रभुता दोषों पर प्रहार हुआ है तथा समाज में नया परिवर्तन समय–समय पर आया है। जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन का भारत में वैदिक दर्शन की पशुबलि, दास–प्रथा, नारी–उत्पीड़न, क्रियाकांड कुप्रथाओं के कारण भारत में ही समकालीन रूप से उद्भव हुआ है। इससे भ्रांतियों एवं कुप्रथाओं का उन्मूलन होकर स्वस्थ समाज की रचना हुई ।

चौथे एवं पांचवें अध्याय में जैन दर्शन के राजस्थानी साहित्य का समकालीन अन्य दर्शनों के राजस्थानी साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जैसे–वेद, उपनिषद्, लोकायत, बौद्ध, सांख्य, योग, न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, वेदांत, भक्ति आदि दर्शनों के राजस्थानी साहित्यों का जैन दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन करके समानता एवं असमानता की समीक्षा की गई है। जब तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है तो एक ही विषय पर अनेक अभिमत मिलते हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति ने हमेशा **''सर्वधर्म समभाव''** का परिचय दिया है। इसी संदर्भ में जैन दर्शन के **''अनेकांत एवं स्यादवाद''** रूपी समुद्र में सभी धर्मों की नदियों समाहित हो जाती है, क्योंकि जैन दर्शन उदारवादी दर्शन है।

इस प्रकार यह शोध–प्रबन्ध सभी दृष्टियों से सम्पूर्ण (Holistic) है। राजस्थानी भाषा में शोध कार्य कम होते हैं। अतः मैं डॉ. रेखा भंसाली को शुभकामना एवं बधाई देता हूँ कि आपका यह शोध कार्य पुस्तक रूप में विद्वानों, शोधार्थियों एवं पाठकों के मध्य जायेगा तो 20 वर्ष पुराना ठोस, युक्ति संगत, तथ्यात्मक, मौलिक शोध कार्य सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। दर्शन का विद्यार्थी होने के नाते मेरे मन में एक ठीस भी है कि डॉ. रेखा भंसाली ने इतने सुन्दर, विद्ववतापूर्ण, तथ्यात्मक तथा उपयोगी शोध कार्य को 20 वर्ष तक अपने पास सीमित रखकर अब पुस्तकाकार करके शोधार्थियों एवं पाठकों के साथ न्याय नहीं किया है। कृपया क्षमा करें, न्यायसंगत बात उद्‌धृत कर रहा हूँ जो हर शोधार्थी को ध्यान रखनी चाहिए। आपका यह शोधकार्य मंगलकारी, उपयोगी एवं स्वस्थ समाज रचना में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो। मेरी शुभ कामना, आर्शीवाद।